बिहारी का जीवन-परिचय

- जन्म : 1595 ई.
- जन्म स्थान : बसुआ गोविन्दपुर
- मृत्यु : 1663 ई.
- पिता : केशवराय
- रचना : बिहारी सतसई (719 दोहो का - संग्रह)

जीवन-परिचय-

रीतिकाल के महान कलाकार महाकवि बिहारी का जन्म 1595 ई0 में ग्वालियर के निकट 'बसुआ गोविंदपुर' नामक गाँव में हुआ था। ये मथुरा के चौबे थे। पिता का नाम केशवराय था। आठ वर्ष की आयु में इनके पिता इन्हें अपने साथ ओरछा (बुन्देलखण्ड) ले गये। इनके गुरु आचार्य केशवदास थे।

बिहारी का बचपन ओरछा में बीता। युवावस्था में ये अपनी ससुराल मथुरा जाकर रहने लगे थे। किन्तु ससुराल में उचित सम्मान न मिलने के कारण ये वहाँ से कन्नौज के राजा मिर्जा जयसिंह के दरबार में चले गये। वहाँ इन्हें पर्याप्त सम्मान मिला। कहते हैं कि उस समय राजा अपनी छोटी रानी के प्रेमपाश में फंसे हुए थे। वे राजकाज की सब चिन्ता छोड़कर हर समय अपने महल में पड़े रहते थे।

तब बिहारी ने राजा के पास एक दोहा लिखकर भेजा-

"नहिं पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं विंध्यो, आगे कौन हवाल ॥ "

इस एक ही दोहे ने राजा की आँखें खोल दीं। वे ठीक से राज्य की देखभाल करने लगे। दरबारी जीवन में बिहारी को बहुत सम्मान मिला। कहा जाता है कि राजा जयसिंह बिहारी को प्रत्येक दोहे की रचना पर

एक स्वर्ण मुद्रा (अशर्फी) पुरस्कार देते थे। 1663 ई0 में इस महाकवि का परलोकवास हो गया।

रचना –

बिहारी की एकमात्र रचना है-

"बिहारी सतसई" ।

भाषा- शैली -

बिहारी की भाषा साहित्यिक भाषा ब्रज भाषा है। माधुर्य पूर्ण व्यंजना प्रधानशैली , प्रसादगुण से युक्त सरस शैली एवं चमत्कार पूर्ण शैली का प्रयोग किया है।

****